आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 1/अंक 2/दिसंबर 2021
Received: 03\12\2021; Revised: 10\12\2021; Accepted:16\12\2021; Published:24\12\2021

# फीजी में हिंदी लोक गीतों की परंपरा

नरेश चन्द
प्राध्यापक
फीजी नेशनल यूनिवर्सिटी,फीजी

नरेश चन्द, **फीजी में हिंदी लोक गीतों की परंपरा**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 1/अंक 2/दिसंबर 2021,(162 - 173)

## सारांश :

लोकगीत अत्यंत प्राचीन एवं मानवीय संवेदनाओं के सहजतम उद्गार हैं जो लोक-जिह्वा का सहारा लेकर एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचती रही है | सामान्यतः लोक में प्रचलित, लोक द्वारा रचित एवं लोक के लिए रचित गीतों को लोकगीत कहा जा सकता है। सन् १८७९ से लेकर १९१६ तक जब ६०९६५ भारतीय श्रमिक फीजी लाए गए तो वे अपने साथ लाए अपने लोकगीत जो उन की सहज संवेदनाओं के संवाहक थे | गिरमिट के अमानवीय प्रथा के तहत दबे-कुचले भारतीय श्रमिकों ने अपनी संस्कृत को बचाय रखने के लिए और गिरमिट के कष्ट एवं अपमान, घर-परिवार से बिछड़ने की पीड़ा और जीवन संघर्षों से जुड़ी अपनी चिंताओं को अभिव्यक्ति देने के लिए लोकगीतों का सहारा लिया। इन्हीं लोकगीतों द्वारा फीजी में बसे प्रवासी भारतिय अपनी जड़ों से जुड़ते हैं और उनको उनकी पहचान मिलती है| समय के साथ फीजी में गिरमिटियों के लोकगीत, जो उन की धरोहर है, की कई शैलियाँ प्रायः लुप्त होती नज़र आ रही हैं जिनका पुनरुत्थान करना अतिआवश्यक है |

## फीजी में हिंदी लोक गीतों की परंपरा:-

### प्रस्तावना :

सामान्यतः लोक में प्रचिलित, लोक द्वारा रचित एवं लोक के लिए गाए गए गीतों को लोकगीत कहा जा सकता है | लोकगीत लोक के गीत हैं जिन्हें कोई एक व्यक्ति नहीं बल्कि पूरा लोक समाज अपनाता है |

लोकगीतों में जनसाधारण के हृदय की सरल एवं सहज भावनाएं होती हैं जो वास्तविक एवं व्यवहारिक जीवन से जुड़ी हुई होती हैं। डा□. वासुदेव शरण अग्रवाल के अनुसार "लोकगीत किसी संस्कृति के मुह बोलते चित्र हैं|" परंपरा, रीति-रिवाज, सामाजिक व धार्मिक विषयों पर आधारित होने के कारण लोक गीतों को संस्कृति का परिचायक माना जाता है | लोकगीतों में, संस्कार गीत, जातीय गीत, विवाह के गीत, त्योहारों के गीत और ऋतुसंबंधी गीत भी शामिल हैं | डॉ. शान्ति देवी जैन के अनुसार लोक गीतों में लोक का समस्त जीवन चरित्र है | उन का कहना है कि शिशु के प्रथम क्रंदन से लेकर जीवन की अंतिम कड़ी तक के भाव चित्र लोक गीतों में होते हैं जिन में जीवन के विविध रूपों के दृश्य देखने को मिलते हैं |

## फीजी में गिरमिटिया भारतियों के लोक गीत :-

गिरमिट प्रथा के तहत अट्ठारह सौ उन्नासी से लेकर उन्नीस सौ सोलह तक साठ हज़ार से अधिक भारतीय मजदूरों को फीजी लाया गया | व्यापक रूप से ये मजदूर भारत के अनेक क्षेत्रों से लाए गए थे और यह तो स्वाभाविक है की वे अपने साथ लाए होंगे अपनी संस्कृति के परिचायक, अपने विभिन्न लोक गीत | इन लोकगीतों में अलग-अलग क्षेत्रीय भाषा, बोली, संस्कृति, रहन-सहन, पूजा और अनेक प्रकार के संवाद एवं हाव-भाव रहे होंगे |

फीजी में गिरमिट के अमानवीय प्रथा के तहत दबे-कुचले भारतीय श्रमिकों (जो ज्यादातर अनपढ़ थे) ने अपनी संस्कृत को बचाय रखने के लिए, और गिरमिट के कष्ट, घर-परिवार से बिछड़ने की पीड़ा और जीवन संघर्षों से जुड़ी अपनी चिंताओं को अभिव्यक्ति देने के लिए, अपने लोकगीतों का सहारा लिया होगा ।

गिरमिट काल के दौरान १८९० के दशक में गिरमिटिया मजदूरों द्वारा लोक गीत गाए जाने की चर्चा करते हुवे पंडित तोताराम सनाढ्य जी ने अपनी पुस्तक 'फीजी में मेरे २१ वर्ष' में लिखा है – "रविवार को मैं अन्य कुली लाइनों में टहलने के लिए गया था। वहां मैंने लोगों को आल्हा, रामायण और तानपुरा बजा कर भजन गाते हुवे देखा |"

लोकगीतों में प्राचीन परम्पराएँ, रितिरिवाज, धार्मिक एवं सामाजिक जीवन के साथ अपनी संस्कृति दिखाई देती हैं। उन लोक गीतों में से कई ऐसे गीत हैं जो आज भी हमारे देश में प्रचिलित हैं और कई गीत बदलते हुवे काल, और परस्थिति के कारन भुला दिए गए या लुप्त होते नज़र आ रहे हैं जिनका पुनरुत्थान करना अतिआवश्यक है |

## बिदेसिया :-

दिन भर के कठिन श्रम के बाद, गिरमिटियाओं को अपने ' कुली लाइंस' के बाहर समूहों में बैठ कर अपने गीतों को गाने में कुछ राहत मिलती होगी । पीछे छोड़ आए अपने प्रिय जनों को याद कर के वे शायद अपने मन की व्यथा 'बिदेसिया' लोक गीतों के माध्यम से व्यक्त करते होंगे | बिदेसिया उन्नीसवीं शताब्दी में उत्तर भारतीयों

के बीच एक प्रचलित गीत शैली के रूप में भारत के भोजपुर क्षेत्र में उत्पन्न हुई थी | जब पति नौकरी के लिए विदेश में होते थे तब उनकी पत्नियाँ इन विलाप गीतों के माध्यम से अपने असहनीय विरह-वेदना को व्यक्त किया करती थीं। प्रसाद (२०१४) के अनुसार बिदेसिया गिरमिटियों का एक ऐसा लोक गीत था जिस के ज़रिये आमतौर पर एक महिला, अपने मन की व्यथों को आंसू बहती प्रकट करती थी।

फीजी के गिरमिट काल पर उल्लेखित एक बिदेसिया की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं -

*फरंगिया के राजुआ मां छूटा मोर देसुआ हो,*

*गोरी सरकार चली चाल रे बिदेसिया।*

*भोली हमें देख आरकाटी भरमाया हो,*

*कलकत्ता पार जाओ पांच साल रे बिदेसिया।*

*डीपुआ मां लाए पकरायों कागदुआ हों,*

*अंगूठा आ लगाए दीना हार रे बिदेसिया।*

*पाल के जहाजुआ मां रोय धोय बैठी हो,*

*जीअरा डराय घाट क्यों नहीं आए हो,*

*बीते दिन कई भये मास रे बिदेसिया।*

*आई घाट देखा जब फीजी आके टापुओ हो,*

*भया मन हमरा उदास रे बिदेसिया।*

*कुदारी कुखाल दीना हाथुआ मा हमरे हो,*

*घाम मा पसीनुआ बहाए रे बिदेसिया।*

*खेतुआ मा तास जब देवे कुलम्बरा हो,*

*मार-मार हुकुम चलाये रे बिदेसिया।*

*काली कोठरिया मां बीते नाहि रतिया हो,*

*किस के बताई हम पीर रे बिदेसिया।*

*दिन रात बीति हमरी दुख में उमरिया हो,*

*सूखा सब जैनुआ के नीर रे बिदेसिया |*

इस बिदेसिया गीत के अतिरिक्त फीजी में अन्य कोई बिदेसिया गीत प्रचिलित नहीं हुई

यद्यपि अपने मन की व्यथा को व्यक्त करने के लिए फीजी में गिरमिटिए शायद बिदेसिया शैली में कई गीत रचे और गाए होंगे जिनका विवरण आज उपलब्द नहीं है |

## बिरहा

श्री कृष्ण के गोकुल से चले जाने पर गोपी, ग्वाल-बाल, सभी उनके वियोग में विरह व्यथा से युक्त जो गीत गाए थे, बिरहा उन्हीं गीतों का बदला हुआ रूप है | इसीलिए परंपरागत रूप से, बिरहा 'अहीर' जाति का लोकप्रिय गीत रहा है | आज का बिरहा गीत लोगों के मनोरंजन के अलावा हिंदी साहित्य का एक अहम् अंग बन चुका है। जहाँ एक ओर स्त्रियाँ अपने पतियों के वियोग में *बिदेसिया* गाती थीं वहीं विदेस में जब पतियों को जब अपने परिवार की याद सताती तो वे, समूह में हो कर उस विरह में *बिरहा* गीत गा कर अपने मन को सांत्वना देते होंगे | विरहा-गीतों के प्रसंग अधिकतर रामायण, महाभारत और पौराणिक कथाओं पर आधारित होते हैं जिन में श्री कृष्ण की गाथा प्रमुख है |

फीजी में पारंपरिक तौर पर बिरहा गीत 'अहिरवा नाच' के साथ नगाड़ा वाधयंत्र के ताल पर शादी-विवाह के अवसरों पर गाया जाता रहा था | बिरहा गायन और अहिरवा नृत्य पुरुषों द्वारा प्रदर्शित किया जाता था जो घुंघुर लगे हुवे जांघिये पहन कर नृत्य किया करते थे | बिरहा गायक एक हाथ अपने कान पर लगा कर दूसरा हाथ नाटकीय रूप से ऊपर उठा कर गाना शुरू करते थे |

फीजी में प्रचिलित बिरहा गीत की पंक्तियों का उदहारण है –

*'सुरुज लाल के घेरे बदरिया, घेरे बदरिया रे भयवा, कहीं लंका घेरे हनुमान |*

*सोरा सौ ग्वालिन घेरे कन्हैया, घेरे कन्हैया रे भयवा, और मांगे दही के दान ||'*

बिरहा गायन और अहिरवा नृत्य का प्रचलन अब फीजी के गिने-चुने इलाकों में रह गया है जिन में शामिल हैं लम्बसा और बा जिले के कुछ गाँव |

## सोहर

परंपरागत पुत्र जन्म के अवसर पर परिवार और पड़ोस की महिलाएं जो बधाई गीत गया करती हैं उन्हें सोहर कहा कहा जाता है | पारम्परिक तौर पर कन्या के जन्म लेने पर सोहर नहीं गाए जाते थे क्योंकि कन्या का जन्म लेना आनंद का प्रतीक नहीं माना जाता था | कन्या के विवाह में दहेज़ की कुप्रथा के कारण माता-पिता

कन्या का जन्म लेना अपने लिए अहितकर समझते थे. इस के विपरीत, फीजी में गिरमिट काल के अंतर्गत महिलाओं की कमी के और दहेज़ प्रथा के न होने के कारण, बेटी-बेटे दोनों के जन्म के अवसर पर सोहर गीत गा कर आनंद मनाया जाने लगा | फीजी में खास कर बच्चों के जन्म लेने के छ: दिन पर 'छट्ठी' मानते हुवे सोहर गाने का प्रचलन रहा है |

उदाहरण के तौर पर फीजी में गाया जाने वाला एक सोहर कुछ इस प्रकार है –

*रात जियरा व्याकुल भैले हमरो*

*छट्ठी पूजन के सास के बुलाई देव*

*उनहू न एव मोरी मिया के बुलाई देव |*

*सोंठिया पिसन के जेठानी के बुलाई देव*

*उनहू न एव मोरी भौजी के बुलाई देव |*

*रोटिया बनावे के देवरानी के बुलाई देव*

*उनहू न एव मोर बहिनी के बुलाई देव |*

*काजर लगावे के ननदी के बुलाई देव*

*उनहू न एव मोर बहिनी के बुलाई देव |*

दिए गए सोहर गीत में विस्तृत परिवार के सभी महिला सदस्यों के पारिवारिक संबंधों की चर्चा हुई है जो भारतीय संयुक्त परिवार के महत्व को दर्शाता है |

महिलाएं मुख्यता ढोलक, घुंघुरू, और कांच की बोतलों को कीलों से बजा कर सोहर गीत गया करती थीं | अधिकतर सोहर गीत राम-जन्म या कृष्ण जन्म पर ही आधारित होते हैं। छट्ठी के अवसरों पर सोहर गाने की प्रथा भी अब अहिस्ते-अहिस्ते मिटती हुई नज़र आ रही है जब की नई पीढ़ी सोहर गीत सीखने और गाने में बहुत कम दिलचस्पी ले रही है |

## आल्हा

आल्हा, वीरगाथा काल के महाकवि जगनिक द्वारा प्रणीत और परमाल रासो पर आधारित बुन्देली और अवधी का एक महत्त्वपूर्ण छन्दबद्ध काव्य है। इसमें महोबा के वीर आल्हा और ऊदल के वीरता की गाथा होती है। जगनिक का यह लोककाव्य "आल्ह-खण्ड" वीररस से ओत-प्रोत होता है। फीजी में गिरमिट के समय से आल्हा गाने का प्रचलन रहा है जब शायद शर्तबन्ध मजदूरों को उस कठिन समय से गुजरने के लिए इस लोक गीत शैली से प्रेरणा और साहस मिलती होगी |

आल्हा-गायन में प्रमुख संगति वाद्य ढोलक, झाँझ, मँजीरा हैं | आल्हा का मूल छन्द कहरवा ताल में निबद्ध होता है जिन्हें प्रारम्भ में विलम्बित लय में शुरू कर के धीरे-धीरे लय को बढ़ा कर तेज लय में गया जाता है | आल्ह खंड से ली गई एक सुमिरनी कुछ इस प्रकार है –

*तुम्हें विनायक मैं सुमिरत हौं गणपति गणाध्यक्ष महराज*

*विघ्न हरण लम्बोदर स्वामी पूरण करो हमारे काज*

*हे जग तारण भवभय हारण स्वामी एकदंत महाराज*

*विपति विदारण सब सुख कारण राखनहार जगत में लाज*

*तुमही ब्रह्मा औ विष्णु हौ तुमही शम्भू सुरासुर काल*

*तमही गोसाईयां दीनबन्धु हौ स्वामी शिव संभु के बाल*

*तुम्हें मनावैं औ ध्यावैं हम गावैं सदा तुम्हारी गाथ*

*यह वर पावैं गणनायक जी दर्शन देयं मोहि रघुनाथ*

*छूटि सुमिरनी गणनायक कै शाखा सुनो शूरमन केर*

*सत्ती होई बेला रानी ठानी युद्ध पिथौरा फेर*

*आल्ह खंड (प्रष्ट ६०६)*

फीजी में आल्हा गाने वाले कलाकारों की संख्या कम होती नज़र आ रही है और नई पीढ़ी में आल्हा गायन नहीं के बराबर है | शायद कुछ समय उपरांत फीजी में यह लोक गीत विधा केवल लिखित रूप में सीमित रह जाए |

## जतसर

चक्की चलाकर आटा-दाल पीसने के समय स्त्रियों के द्वारा गाए जाने वाले गीतों को जतसर कहा जाता है। इन गीतों में जीवन के विभिन्न रूपों के वर्णन होते हैं | चक्की के दोनों ओर आमने सामने बैठ कर स्त्रियाँ चक्की चलाने के कार्य में एक दुसरे का सहयोग करतीं और पिसाई का कार्य करती हुई गीत गातीं, जो इस कार्य में उन्हें आनंद देता |

इस काम में ज्यादातर एक बुजुर्ग महिला का साथ एक युवती देती जैसे माँ के साथ बेटी या सास के साथ बहू | जतसर गीतों के द्वारा बुजुर्ग महिला अपने परिवार या समाज की युवतियों को शिक्षा देकर उन्हें सशक्त बनाती थीं |वे युवा महिलाओं से परिवार के मूल्यों को साझा करती और विवाहित जीवन की कठिनाइयों के लिए महिलाओं को तैयार करतीं थीं |

जतसर का एक उदाहरण जो मैं अपनी गिरमिटिया नानी जी से सुना करता था, एक युवा लड़की का एक दुसध के साथ चले जाने की कहानी पर आधारित है जिस के प्रारंभिक शब्द कुछ इस प्रकार हैं –

*"पानी के प्यासा सौदागर, घोरा दौरावले री*

*पनिया पियत सौदागर, दंतवा झाल्कवल री*

*अईसन मन करे सौदागर, तोहंरे संग चली जाऊं री ..."*

इस जतसर की कहानी में एक उच्च कुल की बेटी एक दुसध (जो पहले से विवाहित था) के साथ भाग जाती है और अंत में उसे लोक-लाज खो कर सुअर चराने का काम करना पड़ता है |

आज के समय में फीजी में जाता या चक्कियों का प्रयोग न के बराबर रह गया है और हम जातसर लोक गीतों को खो चुके हैं |

## विवाह गीत

भारतीय समाज में विवाह एक सामाजिक एवं धार्मिक इकाई होने के साथ-साथ जीवन का एक आवश्यक संस्कार भी माना गया है। भारतीय समुदाय में विवाह संस्कार को धूमधाम और उत्साह से मनाया जाता है जहाँ वर और कन्या पक्ष अपने रीति-रिवाज़ों के अनुसार अनेक प्रकार के अनुष्ठान करते हैं। फीजी के सन्दर्भ में हिन्दू विवाह के हर एक अनुष्ठान के लिए गीत गाए जाते हैं जैसे –

- तेलवान की तैयारी के गीत
- धरती पूजा करने के गीत
- कलश की थाली उतारते के गीत
- कालश बनाने के गीत
- मण्डप बनाने के गीत
- तेल हल्दी लगाने के गीत
- लावा भूजने के गीत
- स्नान और नेह्छु के गीत
- बरात के स्वागत गीत
- द्वार पूजा के गीत
- परछनके गीत
- भांवर के गीत
- कोहबर के गीत
- बारातियों के भोजन के समय के गारी गीत
- विदाई गीत

विवाह गीतों में मुख्यता शिव विवाह एवं राम विवाह के प्रसंगों का वर्णन मिलता है |

फीजी में प्रचिलित एक विदाई गीत के शब्द कुछ इस प्रकार हैं –

*बाबुल मोर नैहर अब छूटा जाए |*

*अपने मैं आजा के बारी दुलारी*

*आईजी के गोद की पाली | बाबुल मोरा .....*

*अपने मैं बप्पा की बारी दुलारी*

*मईया के गोद की पाली | बाबुल मोर .....*

*अपने काका की मैं बारी दुलारी*

*काकी के गोद की पाली | बाबुल मोर .....*

*अपने मैं भैया की बारी दुलारी*

*भाभी के गोद की पाली | बाबुल मोर ....*

इस विदाई गीत में अपने माता-पिता और परिवार से बिछड़ते समय बेटी अपने परिवार के प्रत्येक सदस्य को याद करती है |

फीजी में आज भी हिन्दू विवाह के हर एक अनुष्ठान के लिए गीत गाए जाते हैं परन्तु उन की प्रस्तुतीकरण में परिवर्तन आ गया है | आजकल विवाह गीतों को गाने की शैली में बॉलीवुड के फिल्मी गीतों का प्रभाव पड़ा है और गायक पारंपरिक धुनों को छोड़ कर फिल्मी गीतों के धुनों पर विवाह के गीतों को हर्मोनियम पर गाते हैं| पहले के समय में जहां परिवार की महिलाएं समूह में बैठ कर, ढोलक और घुँघरू बजा कर विवाह के गीतों को गया करती थीं वहीं आज गाने वाले कलाकारों को पैसे दे कर विवाह गीतों को गाने के लिए बुलाया जाता है | इसी लिए शायद जो भाव पारिवारिक महिलाओं द्वारा प्रस्तुत विवाह गीतों में था वह किराये पर लाए गए गायकों द्वारा गाए गए गीतों में नहीं पाया जाता |

## फाग गायन या फगुआ

फीजी में गिरमिट प्रथा के दौरान हिन्दुओं का प्रमुख धार्मिक त्यौहार होली था और इस दिन सार्वजनिक छुट्टी होती थी | होली एकता का पर्व है और इस महान पर्व को मनाते हुवे लोग एक रंग में रंग कर होली गीत या 'फगुआ' गाते हुए इस त्यौहार का आनन्द लेते हैं |

फाग गीतों की उप-शैलियों में शामिल हैं चौताल, झूमर, बैसवारा, जाती जोगीरा, कबीरा इत्यादि | फाग गीतों की इन उप-शैलियों को उनके छंद, धुन और लयबद्धता और गाने की तरीके से पहचाना जाता है |

होलिका दहन के विषय पर फीजी के फाग लेखक श्री महाबीर मित्र (१९८०) द्वारा रचित एक झूमर इस प्रकार है –

*निज हाथ लिए प्रहलाद होलिका कहने लगी // टेक //*

*कर के कठिन तप ब्रह्मा से वरदान हैं पाए |*

*पावक का प्रभाव हमें नहीं सके नसाये //*

*जल जईहैं प्रहलाद चिता में,*

*भाई रखिये विषय यह याद होलिका कहने लगी //१//*

*सुन कर के यह बैन हिरंयाकुश हर्षाए |*

*चिता माहि प्रहलाद सहित हर्षित बैठाये //*

*आग लगाय दियेहु हिरणाकुश,*

*मन की सब त्याग विषाद होलिका कहने लगी // २//*

*चिता माहीं जल रही होलिका गर्व नसाये |*

*बचे भक्त प्रहलाद कछुक तन आंच न आए //*

*निज गति देख होलिका रोई,*

*फल पायहु कर के पाप, होलिका कहने लगी //३//*

उलारा

*प्रभु निज भगतन के रखवारे, प्रभु निज भगतन के रखवारे*

*जल कर हो गई भसम होलिका,*

*प्रहलाद के प्रभु रखवारे, प्रभु निज भक्तन के रखवारे*

प्रत्येक चौताल, झूमर, बैसवारा, जाती लगभग १० से १५ मिनटों का होता है और अंत में उलारा गया जाता है जिस का धुन पृथक होता है |

## जोगीरा

जोगीरा आमतौर पर भारतीय जनसाधरण की काव्य विधा है जिसे होली के समय फाग गीत या फगुआ गाते समय मनोरंजन के लिए तमाशा भाव में गाया जाता है | गायन की शैली में कविता गाने के बाद है- *'जोगीरा सा रा रा रा रा ..."* गाया जाता है | फीजी के देहात में किसी अज्ञात कलाकार द्वारा रचित जोगीरा का एक उदाहरण कुछ इस प्रकार

है –

*एक अचम्भा हम ने देखा, नदी में लग गई आग (२)*

*मछली सरे पेड़ पे चढ़ गईं, झींगा गावे फाग, जोगीरा सा रा रा रा रा....*

**कबीरा:** कबीरा फाग गीत की एक शैली है जिस में गायक लय में *"सुन लेवो मोर कबीर, हो रामा सुन लेवो मोर कबीर"* गा कर फिर कबीरदास के दोहों को गाता है |

होली के दिन लोग टोलिओं में घर-घर घूम कर फाग गाते हैं, रंगों से खेलते हैं और खुशयां मनाते हैं | हरेक घर पर फाग गाने के बाद वहां से प्रस्थान करने से पहले उस परिवार के चिरस्थायी सुख की कामना के लिए फाग की एक उप-शैली *' सदा-आनंद '* गाया जाता है | 'सदा आनन्द' गा कर परिवार के लिए सुख, शांति और समृद्धि की कामना की जाती है। फीजी देश में प्रचिलित 'सदा आनन्द' के शब्द कुछ इस प्रकार हैं -

*सदा आनन्द रहे यही द्वारे मोहन खेले होरी हो*

*एक ओर खेले कुंवर कन्हैया एक ओर राधा गोरी हो*

*भर पिचकारी अंग पर मरे चुनरी रंग में बोरी हो*

*जिए गवैया और बजवैया जिए गाँव के लोग हो*

*राम करे एक बेटवा होइहैं नाम धरे गिरधारी हो*

*कहा सुना सब माफ़ करना येफागुन की होरी हो*

फीजी में ज्यादातर देहात के लोग फाग गाते हैं और धीरे-धीरे लोक गीत की इस विधा में लोगों की दिलचस्पी कम होती नज़र आ रही है | नतीजन फीजी में भारतीय समाज का एक बड़ा हिस्सा फाग गीतों के आनंद से वंचित रह जाता है |

## शोधकार्य

फीजी के प्रवासी भारतीयों की नई पीढ़ी में हिंदी लोक गीतों के प्रति मनोवृत्ति पर एक शोधकार्य लौतोका इलाके में किया गया जिसमें एक सौ पाँच भारतीय युवाओं ने भाग लिया | इस शोध कार्य के आंकड़ों से पता चलता है कि उन युवाओं के माता-पिताओं में ६६.७ प्रतिशत लोग हिंदी लोक गीत गया करते थे जब की शोध में भाग लेने वाले ६.१ प्रतिशत युवाओं ने यह दर्शाया कि उन की दिलचस्पी बॉलीवुड के फिल्मी गीतों को गाने में है | इन आंकड़ों से यही पता चलता है कि फीजी के प्रवासी भारतीय युवाओं में हिंदी लोक गीतों के प्रति दिलचस्पी कम हो रही है |

## निष्कर्ष

संगीत हमेशा से भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण पहलू रहा है और लोक गीतों के बिना कोई भी पारंपरिक भारतीय उत्सव पूरा नहीं होता।

इन्हीं लोक गीतों द्वारा हम अपने समाज के विभिन्न रीति-रिवाजों, रहन-सहन, तीज-त्यौहारों आदि का परिचय प्राप्त करते हैं | लोक गीतों से हम प्राचीन इतिहास, ऐतेहासिक घटनाओं, धार्मिक प्रवृतियों और तत्कालीन मनोभाओं को समझ सकते हैं | जन साधारण के लिए मनोरंजन का साधन होने के अलावा लोक गीत सदियों से संस्कृति को कायम रख कर भावी पीढ़ियों तक पहुंचाती आई है| हम कह सकते हैं कि हमारे फीजी देश में भारतीय संस्कृति को बचाए रखने में और हम को अपनी जड़ों से जोड़ने में लोक गीतों का बहुत बड़ा योगदान रहा है।

फीजी में कई शैलियों के लोक गीत, जो हमारे पूर्वजों द्वारा गाए जाते थे, समय के साथ मिटते जा रहे हैं | उदाहरण के लिए बिरहा गीत, आलह, जात्सर, सोहर, बिदेसिया और फाग गायन में लोगों की दिलचस्पी कम होती नज़र आ रही है | यह अति खेद का विषय है कि मौखिक अभिव्यक्ति के इन विविध विधाओं के अस्तित्व पर विलुप्त होने का खतरा मंडरा रहा है | मेरा यह विशवास है कि लोकगीतों का विकास अधिक से अधिक होना अति आवश्यक है ताकि हमारी भारतीय संस्कृति का उत्थान हो सके |

## संदर्भ सूची:


१. डॉ. राजकुमारी शर्मा (२०२१) लोकगीत और भारतीय संस्कृति पर इसके प्रभाव - राजकुमारी शर्मा | साहित्य कुंज (sahityakunj.net)

२. पं. तोताराम सनाढ्य (२००४) फीजी में मेरे २१ वर्ष

३. डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल (१९५१) (द्रष्टव्य-आजकल नवम्बर १९५१)

४. महाबीर मित्र (१९८०) फाग मानव मित्र वसंत

५. पं. विवेकानंद शर्मा (१९८३) फीजी में सनातन धर्म – सौ साल
६. राम कुमारी भूषण(१९८१) फीजी के लोक गीत संग्रह
७. ब्रिज लाल (२०१२) चलो जहाजी

**********